लाह सकल्प

मदनलाल कालानी क पार्क म बठा अपन ही ख्याला म खाया हआ था। उस एसा लग रहा था जस उसक पास कछ भी नही ह। उसक हम उम मित्र थाडी गप शप मार कर अपन अपन घरा का जा चक थ। किन्त आज उसक पर ना मन क हा रह थ। उठन का नाम ही नही ल रह थ। सध्या क धधलक म उसक समक्ष पिछल तीस वर्ष चलचित्र की भाति चल पड थ।

वक की नाकरी फिर सशील पत्नि का आगमन आर तभी वक स लान लकर घर बनवाना। नए घर म पहल पत्र का जन्म। लड्ड बाटत वह थकता नही था। पिता बनन का सख वह भी पत्र का पिता। हमार समाज म गर्व माना जाता ह। अभी दा वर्ष भी न बीत थ कि दसरा पत्र भी हा गया। गर्व स छाती फल गई थी मदनलाल की। दा बटा का बाप । पसन्नता क मार मदनलाल आर उसकी पत्नि क धरती पर कदम नही पडत थ। दाना पत्रा का नामकरण बहत धमधाम स किया था। शादी की तरह खर्चा किया था। सनील आर अनिल समय क साथ साथ बढ। सनील इजीनियर बना लकिन अनिल न पढाई म रूचि नही दिखाई। कवल बी ए करी। सनील की एक अच्छी नामी कम्पनी म नाकरी लग गई वह हदराबाद चला गया। उसका विवाह फिर उसक दा प्यार स बच्च हए। मदनलाल पत्नि क साथ उसक घर तीन चार बार रह आए थ। किन्त अपना घर अपना शहर अपना पडास अपन दास्त इन सबका व्यक्ति घर स दर रहकर बहत याद करता ह। सा व वहा अधिक दर तक नही रह पात थ। अपन घर वापिस आकर ही उन्ह चन आता था।

अनिल कभी कहता उस एक वन दिला दा चलता फिरता फास्ट फड रस्टारट खालना चाहता ह वह। ता कभी वह गिफ्ट शाप खालन की बात कहता। आखीरकार अपन पाविडट फड स लान लकर मदनलाल न उस आडिया वीडिया कसट की दकान अपनी कालानी की ही मार्कट म खलवा दी। उसीका फशन था उन दिना। फिर अनिल का विवाह हा गया। मदनलाल न साचा फ़्रागा नहा गए√। सब तरह स जीत जी अपनी जिम्मदारिया नाकरी रहत ही परी कर ली। अनिल की दकान अच्छी चल पडी थी। घर म खशहाली छा गई थी। मदनलाल न कभी भी अनिल स पसा की बावत काई बात नही की आर न ही अनिल न अपन पापा का कभी कछ बताया। सनील न भी कभी मा बाप का एक पसा नही भजा। मदनलाल न एक बार पत्नि स इस विषय पर बात की ता वह झट वाली फ़्हमन पस क्या करन ह। हम क्या कमी ह। बच्चा की अपनी जरूरत ही परी हा जाए आज की महगाई क दार म यही क्या कम ह। √सा बात आई गई हा गई।

अनिल न अपनी शादी स पहल अपन ममी पापा का वडरूम लन की जिद की ता मदनलाल का यह बात वतकी लगी।किन्त तव भी अनिल की मा न मनवा लिया कि वट की खशी म ही हमारी खशी ह।वच्चा क काई अरमान अधर न रह जाए।शादी क साल क भीतर ही अनिल क वटी हा गई।मा का सारा समय वह की सवा व वच्च की दखरख म व्यस्त रहन लगा।वह घर क काम स जी चराती थी।ऊपर स काम वाली वाई भी कछ दिना क लिए छट्टी चली गई।मा दम की मरीज थी।वा वहद थक जाती कमजार थी।शीघ ही विस्तर स लग गई।तभी मदनलाल भी रिटायर हा गए।वा पत्नि की दवा दारू आदि दखन लग गए।पर हानी का कान टाल सकता ह।तीन महीना म ही वह स्वर्ग सिधार गई।वच्चा व वाप क बीच मा सत वनी रहती थी।सा अव मदनलाल एकदम अकल पड गए।सनील मा क निधन पर सपरिवार आया वहत दखी था।किन्त वह पापा का साथ चलन क लिए कहन की आपचारिकता भी नही निभा सका।मदनलाल ता वस भी जान वाल नही थ पर खर ।

हमार समाज म परूष का विधर जीवन आरत क विधवा हान की अपक्षा अधिक करूणामय हाता ह।परूष न जीवन पर्यन्त स्त्री पर हक्म चलाया हाता ह।वह वह वटा स समझाता नही कर पाता।जवकि विधवा स्त्री घर क काम काज पात पातिया क पालन सत्सग आदि म मन लगा समय काट लती ह।मदनलाल की स्थिती वहत करूणामय हा गई थी।

अनिल की साली विदश स दस पदह दिना क लिए वहन क घर आई।अनिल न पापा का लावी म कछ दिना क लिए सान की पार्थना की।व मान गए।आज घर क मालिक स दाना वडरूम छिन गए।व लावी म दीवान पर सान लग गए।पर मदनलाल क मन पर गाठ सी पड गई।

वह की मा भी आ गई।वह नातिन का लकर मदनलाल क वडरूम म सान लग गई क्याकि वह का दसरा वच्चा हाना था।वटा हआ घर खशिया स भर उठा।वह क मायक वाला का मला लगा रहा।उन दिना लावी म भी भीड लगी रहती।मदनलाल कभी लावी म लटत ता कभी वडरूम म।रात दर तक सव वठ गप्प मारत उनकी उम या उनक आराम क वार म काई भी नही साचता।पत्नि हाती ता साचती।व उसक विना असहाय हा गए थ।वह अपन मन की वात किसस कह ।अनिल अपना खन था पर कितना वगाना।दिल की गाठ पर आर गाठ पड रही थी।

उस दिन मदनलाल न दात निकलवाए थ सा उस छाड सव घमन चल गए।वह पीछ स अखवार पढता रहा।दापहर ढाई वज जारा की भख लगी फिज म दखा वहा कछ भी नही पका रखा था।हा

वड रखी थी दा तीन पीस खा लिए।रात आठ बज सव की वापसी हई।किसी का उसकी चिन्ता ही नही थी।उनक साथ ढाव की दाल व तदरी राटी भी थी।अपन दाता की दर्द क कारण मदनलाल न कहा कि उस मग की दाल आर नरम सी राटी बना दा।इतना सनना था कि वह न वर्तन पटकन क साथ साथ चिल्लाना भी शरू कर दिया।मदनलाल विना कछ खाए पीए जाकर चपचाप लट गए।अनिल उसका अपना खन सव कछ दख सन रहा था।पापा की हालत भी समझ रहा था।पर शायद अपनी पत्नि स कछ कहन का साहस वह नही जटा पा रहा था।मदनलाल क दिल पर फिर एक गाठ पड गई।

उसका दर्द वाटन वाला काई नही था।वह दिन पर दिन पत्नि की कमी वहत महससन लगा था।सनील का फान आए वहत दिन हा चक थ।मदनलाल न उस फान किया।आपचारिक हाल चाल क सिवाय आर काई वात नही हा सकी।उसन एक वार भी नही कहा कि पापा आप कछ दिना क लिए हमार पास आकर घम जाआ।मदनलाल साचता कि सरकार न रिटायर करक निकम्मा कर दिया।घर वाल उस घर म दखना नही चाहत।सब्जी दध लाना वाजार का काम करवात ह जा काम उसन कभी नही किए थ।पर फिर भी दत्कार।तिरस्कार ।आखीर वह कहा जाए अपना घर छाडकर ।वहत वडा सवाल था सामन ।

पिछल जख्म अभी सख भी न थ कि अचानक एक दिन सवह नीद जल्दी न खलन क कारण मदनलाल दध लन नही जा सका।असल म सारी रात खासी न उस परशान किया ता तडक जाकर कही उसकी आख लगी थी।उस पर वह न ता घर का सिर पर उठा लिया।अनिल जाकर पकट का दध ल भी आया परन्त वह न जली कटी सनान म काई कसर नही छाडी।मदनलाल क दिल पर गाठ पडन का सिलसिला इसी तरह चलता रहा।एक दिन वह टी वी उठाकर अपन कमर म ल गई ।वहा ए सी म बठकर टी वी पागाम दखन हात थ।व लाग खाना भी वही खात थ अव।मदनलाल खवर भी न सन पाता था अव।अपन लिए उसन एक ब्लक एण्ड व्हाईट टी वी लान की साची।आर साचा कि करन दा वच्चा का अपनी खशी।

स्कला म छट्टिया हा रही ह।सनील एक हफ्त क लिए सपरिवार आ रहा ह।मदनलाल का लगा जीवन म वहार कदम रख रही ह।परन्त तभी उन पर एक गाज गिरी।उनका विस्तर लावी स उठाकर गराज जिसम कार कभी नही आ पाई थी म लगा दिया गया।व फटी आखा स अनिल का मह तकन लग।सकपकाकर अनिल झटपट वाला \पापा भया भाभी व वच्च आ रह ह।वडरूम

म भाभी व भया आर लावी म वच्च साएग।यहा शान्ति ह आप चन स साना।आपका थाडा एडजस्ट ता करना पडगा न।ख़

रात की गाडी स सनील का परिवार आ पहचा।जब आपचारिक हाल चाल पछना समाप्त हआ ता मदनलाल सान गए। पापा का गराज म सात दखकर सनील का मन विचलित हा उठा।लकिन वह किस मह स कछ कहता।वह स्वय ता पापा का ल जा नही सकता था।उसका फ्लट छाटा था आर वीवी वच्चा का अपन आप म रहन की आदत सी हा गई थी।फिर पापा की खासी की आवाज म वा सव रात का साएग कस।यहा अनिल ता सवह आठ वज उठता आर दस वज आराम स दकान पर जाता ह।जवकि वह सवह सात वज नाकरी पर चला जाता ह।सनील का पापा स प्यार ता वहत ह लकिन उसकी अलग तरह की मजवरिया ह।सा वह सव दखकर भी चप रहा।

दव हाठा स एक दिन उसन इतना अवश्य कहा कि उसका गजारा उस छाट स फ्लट म मश्किल स हा रहा ह।यदि उस भी उसक हिस्स क पस मिल जात ता ता वा भी वही पर मकान ल लता।इतना सनत ही अनिल व उसकी पत्नि सारा दिन मह फलाए रह।खर वा लाग चल गए विना किसी फसल क।

उनक जान क काई चार महीन वाद गर्मिया म अनिल सपरिवार अपन किसी मित्र व उसक परिवार क साथ पदह दिना क लिए शिमला चला गया।एक वार भी उसन पापा का साथ चलन का नही कहा।उसका मन रखन का ही कह दता।वल्कि जात हए व दाना वडरूम वद कर गए।गर्मी जारा पर थी।हमशा की तरह मदनलाल शाम की सर क वाद अपन दास्ता क साथ पार्क म वठ सव याद कर रह थ।वढत धधलक क साथ साथ धीर धीर सभी मित्र अपन घरा का चल गए।इसक विपरीत मदनलाल आज चप था।उसक भीतर की गाठ इतनी ज्यादा हा गई थी कि वा एक नया रूप धारण करना चाह रही थी।

वह साचन लगा उसन इतना वडा घर अपन लिए वनाया था।अपन परिवर क सख क लिए।आज उसी घर म उसी क लिए जगह नही वची।आर न ही परिवार क नाम पर काई व्यक्ति।ता फिर क्या ह यह सव।ढर सारी गाठा न मजवत हाकर एक लाह सकल्प का रूप धारण कर लिया।वह उसी पल वहा स एक पापर्टी डीलर क पास गया।उस साथ लजाकर अपना घर दिखाया।अव इस घर की कीमत डढ कराड क करीव थी।एक हफ्त म मदनलाल न घर वच दिया आर पास ही किराए का एक मकान लकर उसम सारा सामान रखवा दिया।उस घर का एक साल का किराया साठ हजार

पशगी द दिया।उसक वाद दकान क परान नाकर का एक वद लिफाफा पकडा दिया जिसम नए घर की चावी किराए की रसीद पाच लाख रूपय का चक आर एक पत्र था।वड वट सनील का भी पाच लाख रूपय का डाफ्ट वनवा कर रजिस्टी भज दी।स्वय वह किसी का वताए विना अजानी मजिल की आर चल पडा।

शिमला स वापिस आकर अपन घर क वाहर किसी आर क नाम की नम प्लट दखकर एकवारगी अनिल व वह घवरा गए।घटी वजान पर सामन नए चहर थ।व वाल फ़्लह मकान हमन खरीदा ह।√यह सनत ही अनिल वदहवास सा दकान की आर दाडा।वहा नाकर न उसक हाथ म वही लिफाफा पकडा दिया।उस म रख पत्र का वह पढन लगा

\पिय कहलान याग्य तम म स काई भी नही ह।सा सना म अपनी वची हई जिन्दगी अपन पसा स आराम स अपनी तरह स गजारूगा।मझ ढढन का यत्न ना करना।तम लाग कराग भी नही म जानता ह।मन मकान अपन नाम रखकर वहत अक्ल का काम किया था।तम भी अपन वढाप क लिए कछ साच लना।क्याकि इतिहास स्वय का दाहराता ह।धन्यवाद ।

तम लागा न ही मझ स्वार्थ का पाठ पढाया ह।ख़

तम्हारा पिता

मदनलाल

अनिल धम्म स वही वठ गया।उसकी आखा की कारा स आस लढक कर धरती पर गिर रह थ।उसकी करनी का फल उसक सामन था।

लखिका

वीणा विज फ़ढदित√